ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
UGC APPROVAL NO. - 42652
CHETANA

Received on 28th Feb. 2018, Revised on 7th Mar 2018, Accepted on 18th Mar 2018

शोध पत्र

शैक्षिक योग्यता के सन्दर्भ में विद्यालयीन अध्यापकों की कार्यशैली का अध्ययन

* डॉ. मनोज कुमार शर्मा
प्राचार्य, राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ, जयपुर (राज.)
Email: dr.manojsharma74@gmail.com, Mob.-9829460748

मुख्य शब्द – शैक्षिक योग्यता, वैयक्तिक कारक, कार्यशैली, अध्यापक वरीयता, काई-वर्ग आदि।

सारांश

शैक्षिक योग्यता के सन्दर्भ में राजस्थान राज्य के जयपुर जिले में स्थित प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की कार्यशैली वरीयताओं को समझने के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण किया गया। निष्कर्ष रूप में यह पाया गया कि विद्यालयीन अध्यापकों की उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त कार्यशैली के प्रति वरीयताएँ उनकी शैक्षिक योग्यता से स्वतंत्र होती हैं जबकि शेष सभी कार्यशैलियों- विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, स्वतन्त्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, नमनीय बनाम अनमनीय, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष , वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक तथा दृश्य उन्मुख बनाम श्रव्य उन्मुख पर विद्यालयीन अध्यापकों द्वारा प्रदत्त वरीयताएँ उनकी शैक्षिक योग्यता से स्वतंत्र नहीं होती हैं।

अध्यापकों की विभिन्न मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, वातावरणीय, व्यावसायिक अभिवृत्ति एवं संवेदी आदि तत्वों के प्रति प्रदत्त वरीयताएँ कार्य शैली को व्यक्त करती है। अपनी कार्यशैली की स्पष्ट जानकारी होने पर विद्यालयीन अध्यापक विशेषताओं के विशिष्ट युग्म को बेहतर ढंग से समझ सकता है; कार्य वातावरण के साथ बेहतर तालमेल बैठा सकता है; अपनी क्षमता का अधिकतम उपयोग कर सकता है। कार्य पर ध्यान केन्द्रित करते हुए स्व व्यवहार का अपेक्षाकृत गहन एवं विस्तृत विश्लेषण कर सकता है। दूसरी ओर विद्यालयीन अध्यापकों की कार्यशैली के ज्ञान का उपयोग करते हुए विद्यालय प्रशासक एवं प्रबन्धक विभिन्न सहकर्मियों के बीच बेहतर तालमेल, समस्या समाधान और सृजनात्मकता में सुधार, कार्य-बैठकों के साफल्य, अच्छा समय प्रबन्ध, तनाव में कमी, कार्यकर्ता-अनुकूल वातावरण का विकास, बेहतर कार्य आवंटन, सेवा विस्तार और लाभों का विनिश्चयीकरण, सेवाकालीन प्रशिक्षण हेतु नियोजन एवं क्रियान्वयन, तथा विद्यालयीन अध्यापकों की शैलीगत विशिष्टताओं पर आधारित प्रबन्धन एवं नेतृत्व कर सकते हैं। विटकिन एवं गुडएनफ (1976) ने क्षेत्र आधारित व्यक्तियों को मनोवैज्ञानिक क्रिया के दौरान बाह्य सन्दर्भों पर निर्भर पाया। इस क्रम में अध्यापकीय विशिष्टताओं पर विभिन्न वैयक्तिक कारकों का किस तरीके का प्रभाव पड़ता है इसके स्पष्टीकरण हेतु शोधकर्ता चेष्टाशील रहे हैं।

अध्यापक की नियुक्ति के समय न्यूनतम शैक्षिक योग्यता का होना आवश्यक है। प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक शिक्षा स्तर पर नियुक्ति चाहने वाले अध्यापक की शैक्षिक योग्यता का वांछनीय न्यूनतम स्तर पूर्व निर्धारित होता है। इन स्तरों पर नियुक्ति चाहने वाले अध्यापक वांछनीय न्यूनतम स्तर से अपेक्षाकृत अधिक शैक्षिक योग्यता स्तर वाले भी हो सकते हैं यहाँ तक कि वैयक्तिक और वृतिक उन्नयन के लिए सेवाकाल के दौरान भी अपनी शैक्षिक योग्यता का विस्तार कर सकते हैं। विभिन्न शैक्षिक योग्यता के सन्दर्भ में अध्यापकीय विशिष्टताओं

का अध्ययन खुराना (1986), फ्रीडमैन (1990), अग्रवाल (1991), मित्तल (1992) एवं सेलेप (2000) ने किया तथा अध्यापकीय विशिष्टताओं पर शैक्षिक योग्यता का न्यूनाधिक प्रभाव पाया। तब क्या अलग-अलग शैक्षिक योग्यता रखने वाले विद्यालयीन अध्यापकों की कार्यशैली वरीयताएँ अलग-अलग होती हैं या अध्यापकों की कार्यशैली वरीयताएँ उनकी शैक्षिक योग्यता से स्वतंत्र होती हैं? इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए शोधकर्ता ने शैक्षिक योग्यता के सन्दर्भ में विद्यालयीन अध्यापकों की कार्यशैली का अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस की।

शोध उद्देश्य

अध्ययन में शामिल मिश्रा (2003) द्वारा वर्गीकृत कुल नौ कार्यशैलियों (विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, क्षेत्र स्वतन्त्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, नमनीय बनाम अनमनीय, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष , वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक तथा दृश्य उन्मुख बनाम श्रव्य उन्मुख) के प्रति शैक्षिक योग्यता के सन्दर्भ में विद्यालयीन अध्यापकों की वरीयताओं का अध्ययन करने के लिए कुल नौ उद्देश्य निर्धारित किये गए।

शोध अध्ययन विधि

स्वतन्त्र चर शैक्षिक योग्यता के सन्दर्भ में आश्रित चर विद्यालयीन अध्यापकों की कार्यशैली का अध्ययन करने के निर्धारित उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' का उपयोग किया गया है।

न्यादर्शन एवं न्यादर्श

राजस्थान राज्य के जयपुर जिले में स्थित प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों में से प्रतिनिधि न्यादर्श का चयन बहु स्तरीय न्यादर्श चयन की विधि 'स्तरीकृत यादृच्छिक गैर आनुपातिक उद्देश्यपूर्ण गुच्छ विधि' से किया गया है। इस अध्ययन के अन्तिम न्यादर्श में शैक्षिक योग्यता के चार स्तरों- आरम्भिक (हायर सैकण्डरी/ सीनियर हायर सैकण्डरी/ स्नात्तक/ अधिस्नात्तक + बी.एस.टी.सी. अथवा समकक्ष) में 166, मध्य (स्नात्तक + बी.एड. अथवा समकक्ष) में 261, उच्च (अधिस्नात्तक+बी.एड. अथवा समकक्ष) में 344 तथा अति उच्च (अधिस्नात्तक+बी.एड.+पीएच.डी./ अधिस्नात्तक+एम.एड./ अधिस्नात्तक+एम.एड.+ पीएच.डी.) में 14 सहित कुल 785 अध्यापक चयनित हुए।

शोध उपकरण

विद्यालयीन अध्यापकों की शैक्षिक योग्यता सम्बन्धी सूचनाओं के एकत्रीकरण के लिए शोधकर्ता ने 'वैयक्तिक सूचना प्रपत्र' तैयार किया तथा विद्यालयीन अध्यापकों की कार्यशैली वरीयताओं का मापन करने के लिए 'अध्यापक कार्यशैली सूची' का विकास कर मानकीकरण किया गया।

प्रदत्तों की प्रकृति तथा सांख्यिकीय प्रविधियाँ

विद्यालयीन अध्यापकों की शैक्षिक योग्यता से सम्बन्धित प्रदत्त आवृत्तियों में तथा अध्यापकों की कार्यशैली सूची से प्राप्त प्रदत्त वरीयताओं के रूप में प्राप्त हुए। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में संकलित प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक रही। न्यादर्श को शैक्षिक योग्यता के आधार पर चार वर्गों- आरम्भिक, माध्यमिक, उच्च व अति उच्च में वर्गीकृत करने के पश्चात् शैक्षिक योग्यता के सन्दर्भ में विद्यालयीन अध्यापकों की कार्यशैलियों का अध्ययन करने के लिए 4×2 की तालिकाएँ निर्मित करते हुए प्रत्येक कार्यशैली के प्रति प्रदर्शित वरीयताओं के काई वर्ग के मानों का परिकलन करते हुए परिकलित काई वर्ग मानों की सार्थकता का परीक्षण सार्थकता के .05 विश्वास स्तर पर किया गया।

शोध निष्कर्ष

प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि विद्यालयीन अध्यापकों की उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त कार्यशैली के प्रति वरीयताएँ उनकी शैक्षिक योग्यता से स्वतंत्र होती हैं जबकि शेष सभी कार्यशैलियों- विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, स्वतन्त्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, नमनीय बनाम अनमनीय, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित,

वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष, वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक तथा दृश्य उन्मुख बनाम श्रव्य उन्मुख कार्यशैली पर वरीयताएँ उनकी शैक्षिक योग्यता से स्वतंत्र नहीं होती हैं। अर्थात् विद्यालयीन अध्यापकों की उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त कार्यशैली को छोड़कर शेष सभी कार्यशैलियों (विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, स्वतन्त्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, नमनीय बनाम अनमनीय, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष , वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक तथा दृश्य उन्मुख बनाम श्रव्य उन्मुख) पर अध्यापकों द्वारा दी गयी वरीयताएँ उनकी शैक्षिक योग्यता से प्रभावित होती हैं।

शैक्षिक निहितार्थ

शैक्षिक योग्यता के सन्दर्भ में अध्ययन में शामिल कार्यशैलियों पर अध्यापकों द्वारा प्रदत्त वरीयताओं के अग्रांकित निहितार्थ हो सकते हैं-

1. आरम्भिक शैक्षिक योग्यता वाले अध्यापकों का क्षेत्र आधारित कार्यशैली को अधिक वरीयता देना यह सुझाता है कि इन अध्यापकों की शैलीगत विशिष्टताओं को ध्यान में रखते हुए ऐसे कार्य दिये जाने चाहिए जो संरचित कार्य परिस्थितियों में किये जाने हों। इस प्रकार विद्यालयीन अध्यापकों की इस शैलीगत विशिष्टता का उपयोग करते हुए कार्य क्षेत्र में उत्पादकता को बढ़ावा जा सकता है। साथ ही अवसरानुकूल कार्यशैली का चयन करने हेतु उपयुक्त दक्षता विकास के लिए अध्यापक शिक्षकों एवं शोधकर्ताओं को उपयुक्त अभ्यासों/कार्यक्रमों का विकास करना चाहिए। स्वयं अध्यापक उपयुक्त शैली का उपयोग करने के लिए संवेदनशीलता विकसित करने के लिए उपयुक्त चेष्टाएँ कर सकते हैं। शैक्षिक योग्यता के सन्दर्भ में अधिकाँश अध्यापकों का विश्लेषणात्मक कार्यशैली को वरीयता देना अच्दा संकेतक है, तथापि कार्य पर समग्रात्मक दृष्टि से विचार करने की आवश्यकता को देखते हुए पूर्णात्मक चिन्तन भी आवश्यक है। अध्यापकों ने उत्तरदायित्व मुक्त कार्यशैली की तुलना में उत्तरदायित्व पूर्ण कार्यशैली को अधिक वरीयता दी है। यह सुझाता है कि अध्यापक के कार्यवातावरण में आवश्यक संसाधनों की विद्यमानता होनी चाहिए ताकि आवश्यकता पड़ने पर अध्यापकों द्वारा आवश्यक संसाधनों एवं क्षमताओं की प्राप्ति की जा सके। विद्यालयीन अध्यापकों की उत्तरदायित्व को अपने आप स्वीकार करने की वृत्ति उनकी कार्य निष्ठा को पुष्ट करती है। अतः शैक्षिक नियोजक, प्रबन्धक/प्रशासक विद्यालयीन अध्यापकों की कार्यशैली विशिष्टताओं को ध्यान में रखते हुए पर्यवेक्षण/निरीक्षण में लगने वाले अपने समय व श्रम को अन्य कार्यों में अधिक लगा सकते हैं।
2. इन अध्यापकों के समक्ष ऐसी संस्थितियाँ निर्मित करनी चाहिए जिनमें विविध साधनों, रीतियों एवं उपागमों का उपयोग किया जाना अपेक्षित हो। ये अध्यापक कार्य चुनौतियों का सामना बखूबी कर सकते हैं। इन्हें कार्य/समस्या देते समय इनकी इच्छा का ध्यान रखा जाना चाहिए। इतना ही नहीं, इन अध्यापकों को विविध प्रकार से कार्य लक्ष्य प्राप्त करने के लिए इनकी विशिष्टता को समझते हुए आवश्यक सहायता देनी चाहिए। विद्यालयों एवं सम्बद्ध कार्यक्षेत्र की औपचारिक संरचना अर्थात् पर्याप्त प्रकाश, वायु संचार, बैठने की व्यवस्था, शान्त वातावरण एवं शिक्षणोपयोगी आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता को सुनिश्चित किया जाना चाहिए। अध्यापकों के आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता की भावना का उपयोग करने के लिए अधिक से अधिक व्यक्तिगत कार्य दिया जाना चाहिए। व्यक्तिगत कार्य लक्ष्य देते हुए इनकी कार्यक्षमता का बेहतर उपयोग किया जा सकता है। शिक्षा व्यवस्था की प्रकृति एवं साध्यता तथा सामाजिक व लोकतांन्त्रिक दृष्टिकोण से अध्यापकों में गैर वैयक्तिक कार्यशैली का विकास करने के लिए ऐसे कार्यों की योजना बननी चाहिए, जिनमें सामूहिक श्रम एवं प्रयासों की आवश्यकता हो।
3. आरम्भिक शैक्षिक योग्यता वाले अध्यापक गैर वैयक्तिक कार्यशैली को अधिक वरीयता देते हैं, यह लोकतांत्रिक व सामाजिक दृष्टि से यह अच्छा संकेतक है फिर भी इन अध्यापकों को दल के रूप में कार्य करने का अवसर देने के साथ ही साथ वैयक्तिक रूप से दायित्व सौंपते हुए इनमें और आत्मनिर्भरता एवं आत्मविश्वास का विकास किया जा सकता है। इन अध्यापकों से बेहतर कार्य करवाने के लिए कार्य स्थिति की व्यूह रचना इस प्रकार निर्मित/संरचित करनी चाहिए, जिसमें अध्यापकों को लिखित सामग्री या अन्य दृश्यात्मक स्थितियों के साथ अन्तः क्रिया करने का अधिक से अधिक अवसर प्राप्त हो। यद्यपि विद्यार्थी अन्तः क्रिया पर दृश्यात्मक माध्यमों का विशेष प्रभाव

पड़ता है तथापि अध्यापक प्रशासकीय व्यवहार में दृश्यात्मक अर्थात् लिखित निर्देशों/आदेशों पर ही निर्भर न हों। मौखिक आदेशों/निर्देशों की स्वीकार्यता को बढ़ाये जाने का प्रयास करते हुए कार्य-अनुशासन में सुधार लाया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

अग्रवाल, मीनाक्षी (1991). जॉब सेटिशफेक्शन ऑफ टीचर्स इन रिलेशन टू सम डेमोग्राफिक वेरियबल्स एण्ड वेल्यूज, पीएच. डी. एजुकेशन, आगरा, आगरा यूनिवर्सिटी.

कॉहन, जेकब (1977). स्टेटिस्टिकल पावर अनालिसिस फॉर दा विहेवियरल साइन्सेज, न्यूयोर्क, एकेडमिक प्रेस.

खुराना, ए. (1986). सेल्फ एक्चवेलाइजेशन अमंग टीचर्स, आगरा, नेशनल सॉइकोलॉजिकल कार्पोरेशन.

गुप्ता, एस. पी. (2003). सांख्यिकीय विधियाँ, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन.

फ्रीडमेन ए. इसाक (1991). हाई एण्ड लो बर्न-आऊट स्कूल्सः स्कूल कल्चर, आस्पेक्ट ऑफ टीचर बर्न आऊट, इन द जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च - 84 (6), जुलाई-अगस्त (1991), वाशिंगटन, हैल्डेफ पब्लिकेशन.

मितल, जयप्रकाश (1992). एन एक्सप्लोरेटरी स्टडी ऑफ टीचर्स' मोटिवेशन टू वर्क एण्ड सम फेक्टर्स एसोशियेटेड विद हाई एण्ड लॉ वर्क मोटिवेशन ऑफ टीचर्स, पीएच. डी. एजुकेशन, मेरठ यूनिवर्सिटी.

मिश्रा, मुरलीधर (2003). अध्यापकों की कार्यशैलियों का अध्ययन, स्वतन्त्र अध्ययन, वनस्थली, वनस्थली विद्यापीठ.

विटकिन, एच. ए. एण्ड गुडइनफ, डी. आर. (1976). फील्ड डिपेन्डेन्स एण्ड इन्टरपर्सनल बिहेवियर (आर. बी. 76-12), प्रिन्सटन, एजुकेशनल टेस्टिंग सर्विस.

शर्मा, मनोज कुमार (2008). विभिन्न वैयक्तिक कारकों के सन्दर्भ में अध्यापकों की कार्य शैली का अध्ययन, अप्रकाशित पीएच.डी. शिक्षा, जयपुर, राजस्थान विश्वविद्यालय.

सेलेप, केवेट (2000). दा कोरिलेशन ऑफ दा फेक्टर्स : दा प्रोस्पेक्टिव टीचर्स सेन्स ऑफ एफ्फिकेसि एण्ड बिलिफ्स, एण्ड एटीटयूड अकाउंट स्टुडेण्ट कन्ट्रोल 21; इनः नेशनल फोरम ऑफ टीचर एजुकेशन एडमिनिस्ट्रेशन एण्ड सुपर विजन जर्नल आईसी वी 17 (4).

**** Corresponding Author:***
डॉ. मनोज कुमार शर्मा
प्राचार्य, राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ, जयपुर (राज.)
Email: dr.manojsharma74@gmail.com, Mob.-9829460748